स्वर्णिम चतुर्भुज परियोजना – एक अद्भुत क्रांति

"यत्रास्ति गंगा यमुना प्रमाणौ सतीर्थराजो जयति प्रयागः'' ।

पोत परिवहन, सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा संचालित स्वर्णिम चतुर्भज परियोजना राष्ट्रीय राजमार्ग का निर्माण राष्ट्र के आर्थिक एवं बहुमुखी विकास के क्रमबद्ध सूत्रात्मक कार्यक्रमों की श्रृंखला का जाजवल्यमान प्रतीक है। भारत की शस्य–श्यामला सुजला सुफला भूमि पर राष्ट्रीय राजमार्ग द्वारा उच्च कोटि के मानकों के अनुरूप निर्मित यह मार्गरूपी विशालतम चादर सम्पूर्ण राष्ट्र की गौरव गरिमा के संवर्द्धन में न केवल इसके आर्थिक उत्थान की ओर जन–मानस का ध्यान आकृष्ट कर रही है अपितु अपने सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य के संदर्भ में अनेकता में एकता के सिद्धान्त का सूत्रपात कर रही है। जिसके फलस्वरूप राष्ट्र के चारों महानगरों यथा दिल्ली, मुम्बई, चेन्नई, कोलकाता को आपस में जोड़ते हुए एक सूत्र में पिरो रही है। यह राष्ट्रीय राजमार्ग मुम्बई तथा कोलकाता जैसे महानगरों में संयोजित होकर वैश्विक मार्गों का सान्निध्य प्राप्त करेगा। इस भव्यतम मार्ग के निर्माण से हमारे राष्ट्र का आर्थिक धरालत न केवल संपुष्ट होगा अपितु राष्ट्र के सभी प्रमुख व्यावसायिक प्रतिष्ठान अपनी द्विगुणित छवि के साथ सशक्त पथ पर अग्रसर होंगे। तदंतर राष्ट्र अपनी गौरवातीत अवस्था को उल्लेखनीय पंक्तियों के साथ राष्ट्रेजाग्रयाम् वयम् का भाव उद्धृत करेगा–

"चन्दन है इस देश की माटी तपोभूमि हर ग्राम है,
हर बाला देवी की प्रतिमा बच्चा–बच्चा राम है।"

पोत परिवहन, सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय, भारत सरकार की इस निर्माणधीन परियोजना के सम्पूर्ण होने पर राष्ट्र में सन्निहित सम्पूर्ण मानव जाति को इस विशालतम मार्ग के संरक्षण, सुरक्षा एवं रख–रखाव हेतु सम्पूर्ण मार्ग के सजग प्रहरी के रूप में उत्तरदायित्व का निर्वहन मनसा वाचा कर्मणा से राष्ट्र की अक्षुण्य धरोहर के रूप में करना होगा। यथा महाकवि कालिदास की युक्तियुक्त विवेचना – "अस्त्युतर्श्याम दिशि देवतात्मा हिमालयो नाम नगाधिराजः" केवल उत्तर दिशा में सजग प्रहरी का काम कर रहा है किन्तु यह विशालतम राजमार्ग राष्ट्र के चर्तु दिग्–दिगन्त में व्यावसायिक तथा वाणिज्यिक आर्थिक जगत में अपनी कीर्ति पताका (ध्वज) फहराकर राष्ट्र का शिखरोन्नत पथ प्रशस्त करेगा। विश्व के विकसित राष्ट्रों में हमारा राष्ट्र अग्रगण्य हो यह संकल्पना तभी पूर्णरूपेण चरितार्थ होगी जब इस राष्ट्रीय महत्व की अति महत्वाकांक्षी परियोजना का निर्माण पूर्ण रूपेण संपन्न हो जायेगा। तभी राष्ट्र की अनेकता में एकता का भाव निम्न पंक्तियों में दृष्टव्य होगा –"वयं भारतीयः मतानामविभेदैर्लभ् देश भेदेन वयैरेण चालम अयं शाश्वतो धर्म एको धरायाः न सम्भाव्यते धर्म तत्वेषु भेदः" अर्थात् सम्पूर्ण भू–मण्डल पर एक मात्र मानव धर्म सनातन धर्म की संज्ञा से प्रतिष्ठित है। अतः अग्रिम चन्द पंक्तियाँ हमारे राष्ट्र में रहने वाली समस्त मानव जाति जो विविध भाषा–भाषी तथा भिन्न–भिन्न मतावलम्बी हैं, के लिए यह उद्घोष कि "कलिंगा बंगांध्र कद्राविड़ाहीनउपाधीन विहाययैकम् आलम्बभूमः अये भारतीयाः पुरे वात्मरूपम् लभध्वम् यशस चंद्र सुभ्रम तनद्ध्वम्" के साथ राष्ट्र में रहने वाले समस्त कलिंग वासी धर्मान्तरित इसाई वर्ग बंग निवासी, आन्ध्र प्रदेश वासी तथा सम्पूर्ण दक्षिण क्षेत्रीय द्रविड़ मानव सम्पूर्ण राष्ट्र के समग्र समृद्धि वार्द्धक्य में अपना महत्वपूर्ण सहयोग प्रदान कर राष्ट्र को अर्वाचीन गौरव के प्रमुख सोपान पर आरूढ़ करायेंगे। कहने की आवश्यकता नहीं कि इस विशालतम् राष्ट्रीय राजमार्ग के बन जाने पर इस पर तीव्रतम त्वरित गति से चलने वाले वाहनों में ईंधन की बचत तथा गमनागमन की लम्बी दूरी में भारी सिमटाव आ जाने से वैश्विक बाजार की व्यापारिक

गतिविधियों में हमारा राष्ट्र विश्व–व्यापार स्पर्धा में अग्रगण्य भूमिका निभायेगा। साथ ही साथ राष्ट्रीय राजमार्ग के सम्पूर्ण तट पर वृक्षारोपण का अभियान साफल्य प्राप्ति के पश्चात् विशालकाय वृक्षों का आच्छादन मार्ग की सौन्दर्य शोभा तथा नैसर्गिक पर्यावरण को उत्तरोतर द्विगुणित करता हुआ चराचर जगत् के सम्पूर्ण प्राणी मात्र को दीर्घजीवित बनायेगा। स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व राष्ट्र का विकास शनैः शनैः मन्द गति से हुआ है परन्तु सांप्रितम स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् जब सम्पूर्ण राष्ट्र स्वतंत्रता की सांठवी वर्षगाँठ मना रहा है तब यह स्वर्णिम चतुर्भुज योजना विकास के शिखरोन्नत सोपान का पथ त्वरित गति से प्रशस्त कर नये युग का शुभारम्भ कर रही है। ऐसे में भगिनी 'निवेदिता– (सिस्टर एनी बेसेन्ट थियोसोफिकल सोसायटी की संस्थापक) की उक्ति "जगत प्रेम की एक स्वर्ण श्रृंखला, है हम जिसकी कड़ियाँ" यही मंत्र ध्यायें अमित प्रेम से, इस स्वर्ण श्रृंखला की एक एक कड़ी का भला नित्य चाहें।

धन्यवाद, जय हिन्द, जय भारत।

अनिल कुमार खण्डेलवाल
प्रबंधक (तकनीकी)
भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण
प.का.ई. –इलाहाबाद (उ0प्र0)

सिक्किम प्रगति पथ पर

सिक्किम, भारत का 22वाँ राज्य है और तीन देशों – ''चीन, नेपाल, भूटान'' के मध्य स्थित है। भारत का नाथूला पास इसी राज्य में मौजूद है। नाथूला पास जो 1962 के भारत–चीन युद्ध के बाद में व्यापार मार्ग के लिए बंद था, मुख्यमंत्री के दृढ़ संकल्प एवं अदम्य प्रयास से 6 जुलाई 2006 को खोला गया। यहाँ की सड़कें समुद्र स्तह से 14000 फीट से ऊपर निर्मित हैं। नाथूला मार्ग की देख–रेख सीमा सड़क संगठन की जिम्मेदारी है।

हिमालय की गोद में सिमटी, आंगन में हरियाली सजाए, फूलों से सुशोभित यह छोटा–सा सुन्दर राज्य पर्यटकों का मुख्य आकर्षण केन्द्र बना हुआ है। ऊँचे पर्वत, मुख्यतः कंचनजंगा, स्वच्छ नदियाँ, झील झरने, मनमोहक रंग बिरंगे फूल, पौराणिक बौद्ध गुफाएँ, यहाँ की संस्कृति, परम्परा आदि पर्यटकों को मोहित करती है। हजारों की तादाद में देशी और विदेशी पर्यटक प्रतिवर्ष सिक्किम में भ्रमण के लिए आते हैं और प्रकृति की इस अनमोल रचना को निहारकर प्रफुल्लित हो जाते हैं।

यहाँ की सरकार ने बहुत सारे सपने संजोए हैं जैसे इस राज्य के हर कोने में रहने वाले निवासियों को न्यूनतम आवश्यकता के सभी साधन उपलब्ध हों। राज्य के विकास के लिए सड़क की भूमिका अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। सिक्किम का कुल क्षेत्रफल 7096 किलोमीटर है और कुल सड़कें 2806 किलोमीटर है।

नयी सड़कों के निर्माण और सड़क उन्नयन के लिए मुख्यतः सड़क एवं पुल विभाग कार्यरत है। सिक्किम भारत के अन्य राज्यों से सिर्फ सड़क परिवहन से जुड़ा है। यह विभाग केन्द्र सरकार के विभिन्न निधि सहयोग से ही सड़क विकास कार्य को पूरा करने में सक्षम है।

सिक्किम में पैक्योंग हवाई अड्डा निर्माण करने की तैयारी चल रही है ताकि अंतरराष्टीय व उच्च स्तर वाले राष्ट्रीय पर्यटकों की संख्या में वृद्धि हो और यह राज्य लाभान्वित हो और यहाँ के उत्पादन का व्यापार विश्व स्तर पर हो पायेगा।

यहाँ का हर नागरिक सिक्किम को भारत ही नहीं बल्कि विश्व के मानचित्र पर अपना स्थान स्वर्णिम अक्षरों में संस्थापित करने के लिए भरपूर प्रयास में जुटा हैं।

प्रज्ञा सिहं,
अभियन्ता,
सड़क एवं पुल विभाग
गंगटोक (सिक्किम)

राष्ट्रीय राजमार्ग – 4 पर पूणे कटराज संरेखण पर पिअर निर्माण

'हॉक आई' से होगा सड़कों का आधुनिक सर्वेक्षण

राष्ट्रीय राजमार्ग व सभी राज्यों की अन्य विभिन्न सड़कों के निर्माण के लिए पृथ्वी की सतह के ऊपर स्थित विभिन्न बिंदुओं की अपेक्षित ऊँचाई, स्थिति व यातायात से जुड़ी जानकारी प्राप्त करने की कला को सर्वेक्षण कहते हैं। अभी तक सर्वेक्षण का अधिकतर कार्य प्लेन टेबल व लेवलिंग उपकरणों द्वारा मैन्युअल तरीके से किया जाता रहा है जिससे समय तो ज्यादा लगता ही था, साथ ही यह वाहन चालकों के लिए परेशानी का सबब भी बनता रहा है। सही व शीघ्र सर्वे के लिए आजकल जापान द्वारा निर्मित 'टोटल स्टेशन' उपकरण भी इस्तेमाल किया जाने लगा है। कई बार सही सर्वे न होने के कारण देरी होने के साथ–साथ सड़कों के निर्माण की गुणवत्ता भी प्रभावित होती रही है।

केंद्रीय सड़क अनुसंधान संस्थान (सेंट्रल रोड़ रिसर्च इंस्टीट्यूट) नेशनल हाइवे के सही सर्वे व निर्माण संबंधी नई तकनीक विकसित करने के लिए हमेशा से ही प्रयत्नशील रहा है जिसके कारण ही हम आज बेहतरीन सड़कें व फ्लाईओवर बनाने में सफल हुए हैं। नेशनल हाइवे के 50 हजार किलोमीटर लंबे राजमार्गों के लिए जियोग्राफिक इन्फॉर्मेशन सिस्टम (जी.आई.एस) मैपिंग के लिए सड़क परिवहन मंत्रालय से प्राप्त 10 करोड़ रुपये की राशि के चलते केंद्रीय सड़क अनुसंधान संस्थान (सी.आर.आर.आई) ने आस्ट्रेलियन रोड रिसर्च बोर्ड से 1.75 करोड़ रुपए की लागत से 'हॉक आई' नामक नेटवर्क सर्वे व्हीकल उपकरण खरीदा है जिससे सी.आर.आर.आई. अब जी.आई.एस. मैपिंग में भी सक्षम हो गया है। अभी तक सी.आर.आर.आई के पास जी.आई.एस. मैपिंग जैसी कोई तकनीक नहीं थी।

देश में यातायात प्रबंधन व नेशनल हाइवे की हालत सुधारने एवं सड़क बनाने की नई–नई तकनीकों को विकसित करने के लिए केंद्रीय सड़क अनुसंधान संस्थान ने जी.आई. एस मैपिंग की शुरूआत करने के लिए 1.75 करोड़ रूपये खर्च करके जिस 'हॉक आई' (एनएसवी) को खरीदा है, उससे 30–100 कि.मी. प्रति घंटे की रफ्तार से खस्ता हालत सड़कों की तस्वीरें, ऊँची–नीची सड़क का लेवल, सड़क के आसपास की खूबसूरती डिजिटल कैमरे से उतार कर रिकार्ड की जा सकेगी। इस नेटवर्क सर्वे व्हीकल में लगे जियोग्राफिक इन्फॅर्मेशन सिस्टम के चलते कार्यालय में कार्यरत हाइवे इंजीनियर सड़क संबंधी तमाम तरह के आंकड़े प्राप्त व रिकार्ड कर सकेगा जिस से सभी राजमार्गों की बेहतर प्लानिंग व मॉनीटरिंग हो सकेगी।

जी.आई.एस. मैपिंग तकनीक का इस्तेमाल फिलहाल चीन, मलेशिया, सिंगापुर, दक्षिण कोरिया, थाईलैंड व इंडोनेशिया जैसे देशों में हो रहा है। क्योंकि मैन्युअल तरीके से बनाए गए सर्वे मैप में काफी खामियां रह जाती थीं जिससे हाईवे की सड़कों में पूरी गुणवत्ता नहीं आती थी। अब हमारे देश में भी विदेशी तकनीक से लैस 'हॉक आई' नेटवर्क सर्वे व्हीकल के इस्तेमाल से नये हाइवे मैप तैयार किए जा सकेंगे जिस से यातायात प्रबंधन व सड़क बनाने की नई योजना व उनको सुरक्षित रखने का सर्वेक्षण आधुनिक तरीके से हो सकेगा और अंतरराष्ट्रीय स्तर की सड़कों का निर्माण संभव होगा।

इंजीनियर राज कुमार अग्रवाल,
नजदीक राधा कृष्ण मंदिर
सुर्गापुरी, कोटक पुरा–151204

अहमदाबाद एक्सप्रेस वे

राष्ट्रीय राजमार्गों का विकास – लाभ एवं भावी चुनौतियाँ

सड़कें किसी भी देश की नाड़ियाँ व शिराएँ होती हैं जिनके माध्यम से प्रत्येक विकास कार्य प्रवाहित होता है। आज विश्व की अर्थव्यवस्था में सड़कों का विशेष महत्व है। उस राष्ट्र में जहाँ सड़कों की दशा बहुत बुरी है और उनके विकास के लिए समुचित कदम नहीं उठाए जाते, उस राष्ट्र को उन्नत राष्ट्रों की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता, देश की सभ्यता बहुत कुछ सड़कों से ही जानी जाती है। जिस प्रकार सिंधु घाटी, मोहनजोदड़ो व कालीबंगा की सभ्यता तो सड़कों की नियोजित योजना से ही जानी जाती हैं।

हरित क्रान्ति, श्वेत क्रान्ति, पीली क्रांति, नीली क्रान्ति संचार क्रांति के क्रम में देश के राष्ट्रीय राजमार्गों को विश्व स्तरीय बनाने के लिए प्रारंभ की गई 'राजमार्ग क्रान्ति' को साकार करने के लिए राष्ट्रीय राजमार्ग विकास परियोजना, प्रधान मंत्री भारत जोड़ो परियोजना, प्रधान मंत्री ग्राम सड़क योजना, पत्तन संपर्क योजना तथा पूर्वोत्तर राज्य संपर्क योजना जैसी कई योजनाएं प्रारंभ की गई है। विस्तृत आकार वाली इन अति महत्वाकांक्षी परियोजनाओं में सार्वजनिक क्षेत्र एवं निजी क्षेत्र दोनों की सहभागिता है।

देश में राष्ट्रीय राजमार्गों की लम्बाई कुल सड़कों की लम्बाई के भले ही मात्र 2 प्रतिशत के लगभग हो, लेकिन कुल यातायात का लगभग 40 प्रतिशत इन्हीं राजमार्गों से होकर गुजरता है। एक मोटे अनुमान के तौर पर स्वर्णिम चतुर्भुज, उत्तर–दक्षिण, पूर्व–पश्चिम कोरिडोर, पत्तन संपर्क तथा प्रधान मंत्री भारत जोड़ो परियोजना के अन्तर्गत बनने वाले राष्ट्रीय राजमार्गों के पूरी तरह पूर्ण हो जाने पर देश के कुल यात्री एवं माल यातायात का लगभग 60 प्रतिशत यातायात इन्हीं राजमार्गों से होगा।

वर्तमान में, भारतीय अर्थव्यवस्था सर्वाधिक तेजी से विकसित हो रहीं विश्व की अर्थव्यवस्थाओं में से एक है। सकल घरेलू विकास दर आने वाले वर्षों में लगभग 10 प्रतिशत तक होने की संभावना है। इससे निर्यात व्यापार का तेजी से विस्तार होगा। निर्यात को बढ़ाने में विश्वस्तरीय राष्ट्रीय राजमार्गों से बन्दरगाहों तक पहुँच मार्ग काफी हद तक सहायक होगी।

भारत में कुल आबादी के 70 प्रतिशत लोग गाँवों में रहते हैं और गाँवों में चिकित्सा सुविधाएँ अत्यल्प हैं। शहरों से द्रुतगामी सड़क संपर्क होने से चिकित्सक एवं उनके सहयोगी गाँवों में काम कर सकते हैं क्योंकि उनके बच्चों के लिए शिक्षा की व्यवस्था तथा अन्य सुविधाएँ आसानी से उपलब्ध हो सकती हैं। इसलिए ग्रामवासियों के लिए गांवों को शहरों से जोड़ने वाली सड़कें बहुत मददगार साबित होंगी।

भारत में पर्यटन उद्योग के विकास की अपार सम्भावनाएं हैं। प्राकृतिक सौन्दर्य, धार्मिक स्थलों, ऐतिहासिक स्मारकों, सांस्कृतिक समृद्धि के प्रतीक क्षेत्रों के मामले में तो भारतीय पर्यटन पहले से ही अत्यधिक समृद्ध है। अब चिकित्सा पर्यटन, शिक्षा पर्यटन, व्यावसायिक पर्यटन के नए क्षेत्र खुल रहे हैं। इन पर्यटकों को तीव्रगति वाली अत्याधुनिक कारों/आरामदायक बसों से लाने–ले जाने में उन्नत राजमार्गों की भूमिका अति महत्वपूर्ण होगी।

विश्व बैंक की एक रिपोर्ट में कहा गया है कि अकेले स्वर्णिम चतुर्भुज के उन्नत हो जाने से वाहनों की ईंधन खपत, वाहनों की टूट–फूट एवं मरम्मत तथा तीव्र गति के साथ गन्तव्य स्थलों तक पहुँचने के रूप में प्रतिवर्ष लगभग 8000 करोड़ रु. तक की बचत होगी।

औद्योगिक क्षेत्र के विकास पर तो राष्ट्रीय राजमार्गों के निर्माण का प्रभाव दिखाई भी देने लगा है। राष्ट्रीय राजमार्गों

के निर्माण में बड़े पैमाने पर सीमेंट, लोहा एवं इस्पात, गिट्टी, निर्माण उपकरणों आदि की खपत हो रही है। इससे इनकी माँग में भारी वृद्धि हुई है। देश का सीमेंट उद्योग एवं लौह व इस्पात उद्योग तेजी के दौर में है और इसका एक प्रमुख कारण राष्ट्रीय राजमार्गों के निर्माण में सीमेंट एवं लोहे की भारी खपत है।

देश में राष्ट्रीय राजमार्गों का जाल बिछ जाने पर भारत के सुदूर स्थित गाँव प्रधान मंत्री ग्राम सड़क योजना के तहत् बनने वाले सम्पर्क मार्गों के द्वारा राष्ट्रीय राजमार्गों से जुड़कर मुख्य बाजारों से जुड़ जाएंगे। इन से घरेलू बाजारों तथा विदेशी बाजारों तक कृषि उत्पादों की पहुँच तीव्रगामी एवं सुगम हो जाएगी। इससे कृषकों को उनके उत्पादों का अच्छा मूल्य प्राप्त होने लगेगा। कृषि विविधीकरण योजना के कार्यान्वयन में भी इस राष्ट्रीय राजमार्ग तंत्र की महत्वपूर्ण भूमिका होगी।

इन परियोजनाओं से बड़ी मात्रा में रोजगार के अतिरिक्त अवसर सृजित हो रहे हैं। एक मोटे आकलन के अनुसार राष्ट्रीय राजमार्ग विकास परियोजनाओं से लगभग 5 लाख व्यक्तियों को प्रतिदिन प्रत्यक्ष रोजगार मिल रहा है। परोक्ष रूप से सृजित होने वाले रोजगार तो इससे कई गुना अधिक हैं।

विदेशी कंपनियाँ तथा विदेशी निवेशक भी अन्य बातों के साथ–साथ आधारिक अवसंरचना को भी देखकर निवेश करते हैं। पिछले वर्षों में भारत में विदेशी निवेश काफी बढ़ा है। इसी से प्रभावित होकर भारत सरकार सड़क निर्माण में 100 प्रतिशत प्रत्यक्ष विदेशी निवेश, विदेशी कंपनियों की भागीदारी बी.ओ.टी., एस.पी.वी. आदि को बढ़ावा दे रही है।

इस प्रकार हम देख सकते हैं कि राष्ट्रीय राजमार्गों के विकास से हर क्षेत्र प्रभावित होता है तथा इससे विकास को एक नई दिशा मिलती है। इस चहुँमुखी विकास के लिए भविष्य में कुछ चुनौतियों का सामना भी करना पड़ेगा। बढ़ती जनसंख्या की वजह से यातायात पर बढ़ते बोझ, विश्वस्तरीय आधारिक संरचना के अभाव आदि चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा।

भावी चुनौतियाँ

पोत परिवहन सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय का यह प्रयास तो निश्चित रूप से सराहनीय है कि राष्ट्रीय राजमार्ग विकास परियोजना के स्वर्णिम चतुर्भुज तथा गलियारा राजमार्ग प्रखण्डों के तहत जिन राजमार्गों को शामिल नहीं किया गया है उनका भी विकास किया जा रहा है। भारत की परिवहन आवश्यकताओं को देखते हुए राष्ट्रीय राजमार्ग विकास परियोजना समुद्र में एक बूँद की भाँति है। प्रधान मंत्री भारत जोड़ो परियोजना ु निश्चित तौर पर देश के पिछड़े राज्यों को मुख्य धारा में शामिल करने में सहायक होगी। इन दोनों परियोजनाओं के तहत् आने वाले राष्ट्रीय राजमार्गों को 4/6 लेन बनाने मात्र से काम नहीं चलेगा। इनमें से दो लेन तो अपेक्षाकृत धीमी गति से चलने वाले कृषि वाहनों–ट्रैक्टरों तथा बैलगाड़ियों द्वारा घेर लिए जाएंगे। ऐसे में राष्ट्रीय राजमार्गों की एक पूरक व्यवस्था के रूप में ग्रामीण एंव अन्तरनगरीय सड़कों के विकास हेतु पृथक रणनीति अपनाए जाने की आवश्यकता है।

राष्ट्रीय राजमार्ग विकास परियोजना तथा प्रधानमंत्री भारत जोड़ो परियोजना से इतर क्षेत्रों के लिए "आमन–और–तानें" (Hubs-and Spokes) का अभिकल्प तैयार किए जाने की आवश्यकता है। जिस प्रकार साइकिल के पहिए में आमन (केन्द्रक) से तानों (अरों) के द्वारा पहिए की रिम जुड़कर एक सम्पूर्ण पहिए का रूप धारण करती है, उसी प्रकार परिवहन विकास हेतु एक सर्वथा नवीन मॉडल तैयार किया जा सकता है। इससे तेजी से फैल रहे महानगारों की भीड़–भाड़ को कम करते हुए उपग्रहीय शहरों का विकास करने में सहायता मिलेगी। प्रत्येक महानगर से कई स्पोक्स एक्सप्रेस राजमार्ग निकाले जा सकते हैं। इन एक्सप्रेस राजमार्गों से जुड़ने वाले उपग्रहीय शहरों को आपस में जोड़ने वाला एक मुद्रिका राजमार्ग भी

विकसित किया जाना चाहिए, जो 4/6 लेन वाला हो। यदि राष्ट्रीय राजमार्ग वर्तमान की यातायात सघनता का समाधान नहीं कर पाते हैं, तो स्पोक्स एक्सप्रेस राजमार्ग आगे आने वाले दिनों में अपरिहार्य हो जाएंगे।

चूँकि स्पोक्स एक्सप्रेस राजमार्गों के निर्माण में बहुत बड़ी मात्रा में पूँजी निवेश की आवश्यकता होगी, इसलिए सड़क निर्माण में विदेशी प्रत्यक्ष निवेश को आकर्षित करने के लिए एक्सप्रेस राजमार्गों के विकास एवं उन्नयन को स्थावर सम्पत्ति विकास से सम्बद्ध किया जाना चाहिए ताकि निजी विदेशी निवेशक इन राष्ट्रीय राजमार्गों के किनारे मेगा–स्टोरों, शॉपिंग मालों, औद्योगिक आस्थानों तथा अधिवासीय टाउनशिपों का निर्माण एवं विकास कर उन्हें बेच सकें। इन राजमार्गों के किनारे पेट्रोल/डीजल पम्पों, होटलों व रेस्तराओं के विकास एवं आबंटन का अधिकार भी निजी निवेशकों को दिया जाना चाहिए। राष्ट्रीय राजमार्गों के किनारे के विज्ञापन अधिकार भी इनको विकसित करने वाली कम्पनियों को ही दे दिए जाने चाहिएं।

इसमें किसी प्रकार के सन्देह की कोई गुंजाइश नहीं है कि सड़कें–मुख्य अथवा बाईपास तथा पुल 'सार्वजनिक वस्तु' है, इसलिए इनके निर्माण और विकास का दायित्व सरकार के कन्धों पर रहा है। सड़कों की खस्ता हालत ने राज्यों में सत्तासीन राजनीतिज्ञों को पराजय दिलाई है। ऐसे में यदि सड़क या पुल जैसी सार्वजनिक वस्तु को स्थावर सम्पत्ति, जोकि एक निजी वस्तु है, के साथ जोड़ दिया जाता है, तो सड़कों के विकास में निजी क्षेत्र को कूदने में देर नहीं लगेगी। सड़क निर्माण पर आने वाली लागत की भरपाई स्थावर सम्पत्ति से होने वाले लाभ से की जा सकेगी। इस प्रकार सड़कों एवं पुलों को व्यावहारिक रूप से सार्वजनिक वस्तु बनाए रखते हुए भी इनका विकास किया जा सकता है। यह ठीक उसी प्रकार है जिस प्रकार रेडियो एवं दूरदर्शन जैसी सार्वजनिक वस्तुएं उपभोक्ताओं को निःशुल्क प्राप्त होती है और इन्हें प्रदान करने वाली एजेन्सियाँ विज्ञापन, जोकि निजी वस्तु है, से होने वाली आय से करोड़ों रुपए कमाती हैं।

विश्वस्तरीय सड़कों के जरिए भारत के विभिन्न राज्यों के महत्वपूर्ण स्थानों को जोड़ने की मुहिम सुनिश्चित तौर पर अभिनव एवं अनेक लाभ प्रदान करने वाली है। इस परियोजना के पूर्ण हो जाने पर भारतीय अर्थव्यवस्था के स्वरूप में भारी बदलाव आएगा जो इसे विश्व की मजबूत अर्थव्यवस्थाओं की श्रेणी में ला देगा।

उमेश कुमार सिन्हा
टाईप – I
क्वार्टर नं. – 71,
भारत सरकार प्रेस,
प्रेस कालोनी, मायापुरी
नई दिल्ली

सरकारी कामकाज – सरल हिन्दी की मांग

केन्द्र सरकार के विभिन्न कार्यालयों में दैनिक कामकाज में हिंदी के जिस स्वरूप का प्रयोग हो रहा है उसकी बोध गम्यता पर समय–समय पर प्रश्नचिह्न लगता रहता है। अक्सर यह कहा जाता है कि क्लिष्ट हिंदी इसके प्रचार–प्रसार में बाधक है।

वस्तुतः आज राजभाषा के रूप में जो हिंदी चल रही है या चलाई जा रही है, वह सहज रूप से विकसित हिंदी न होकर कृत्रिम रूप से विकसित अथवा विकास मान हिंदी है जिसे समझने में हिंदी के विद्वानों को भी कभी कभार कठिनाई होती है। अतः इस बारे में दो राय नहीं हो सकतीं कि लिखित भाषा ऐसी होनी चाहिए जिसे पाठक आसानी से समझ सकें। समझदार लेखक का यह भरसक प्रयत्न रहता है कि वह अपने पाठक को ध्यान में रखकर अपनी लेखनी उठाए। परन्तु यदि रचना विभिन्न स्तर के पाठकों के लिए हो तो फिर लेखक क्या करे?

सरकारी कार्यालयों में लिखे जाने वाले दस्तावेज जिनमें दैनिक टिप्पण व आलेखन भी शामिल हैं, ऐसी ही श्रेणी में आते हैं, जिनके पाठक भाषागत ज्ञान के सन्दर्भ में अलग–अलग स्तर के होते हैं। ऐसी स्थिति में यह तर्क दिया जा सकता है कि सरल भाषा तो सभी स्तरों के लिए बोधगम्य होती है, इसलिए दुरूह भाषा से बचा ही जाना चाहिए। निष्कर्षतः सरकारी कामकाज में भाषा का स्तर वही होना चाहिए जो हिंदी का न्यूनतम ज्ञान रखने वाले व्यक्ति का हो।

जनहित में व हिंदी के प्रचार–प्रसार के लिए में सरकार की ओर से मार्च 1976 के एक कार्यालय ज्ञापन में हिंदी में काम करने वाले कर्मचारियों से यह अनुरोध किया गया कि वे सरल हिंदी लिखने की आदत डालें। इस कार्यालय ज्ञापन में निम्नलिखित मुद्दे को ध्यान में रखने की उपयोगिता जताई गई:

(1) नोट लिखने में और पत्र लिखने में, सरल हिंदी का ही प्रयोग किया जाना चाहिए ताकि उसे सभी आसानी से समझ सकें। अपनी बात दूसरों तक पहुँचाने के लिए सिर्फ इतना ही काफी नहीं है कि लिखने वाला खुद समझ सके कि उसने क्या लिखा है, जरूरी तो यह है कि पढ़ने वाले को भी समझ में आ जाए कि आखिर लिखने वाला कहना क्या चाहता है।

(2) सरकारी काम में प्रचलित शब्दों का ज्यादा से ज्यादा उपयोग किया जाना चाहिए और लिखते समय दूसरी भाषाओं के प्रचलित शब्दों का उपयोग करने में जरा भी हिचक नहीं होनी चाहिए।

(3) जहाँ कहीं भी यह लगे कि पढ़ने वाले को हिंदी में लिखे किसी तकनीकी शब्द या पदनाम को समझने में कठिनाई हो सकती है वहां उस शब्द या पदनाम के सामने कोष्ठक में अंग्रेजी रूपान्तर भी लिख देना उपयोगी होगा।

साथ ही साथ, यह सुझाव भी दिया गया कि हिंदी लिखते वक्त ऐसी हिंदी लिखने की कोशिश करें जो न तो संस्कृत हो और न ही देवनागरी लिपि में अंग्रेजी हो। भाव यह कि हिंदी का विन्यास उसकी प्रकृति के अनुसार ही होना चाहिए और यह ठीक नहीं होगा कि वह संस्कृत के दुरूह समस्त पदों की लड़ी हो या अंग्रेजी मूल का अटपटा अनुवाद मात्र।

इस चिन्ता की गम्भीरता को दर्शाने के लिए अनेक उदाहरण प्रस्तुत किए जा सकते हैं। निम्नलिखित उदाहरण द्रष्टव्य है:

"पहचान–पत्र के जारी करने को विनियमित करने वाली विद्यमान नियमावली और बातों के साथ यह

उपबंध करती है कि पहचान–पत्र के खो जाने का अपरिहार्य परिणाम पांच रुपये का अर्थदंड होगा। अब यह निश्चय किया गया कि यह राशि बढ़ाकर दस रुपये कर दी जाय।''

(उपर्युक्त दोनों वाक्य अंग्रेजी के इस अंश का अनुवाद है: The existing rules regulating the issue of identity card inter-alia, provide that loss of identity card would entail a penalty of rupees five. It has now been decided to raise the amount to rupees ten.)

क्लिष्टता या कृत्रिमता हिंदी को कठिन बना देती है। अतः हिंदी को सरल बनाने के लिए उसे इस कृत्रिमता से छुटकारा दिलाना होगा। इसे स्पष्ट करते हुए प्रख्यात साहित्कार डा. राम विलास शर्मा ने अपने रोचक लेख ''हिंदी का संस्कृतीकरण'' में इस कृत्रिमता को इस प्रकार व्यक्त किया है कि : न कल्पना कीजिए एक अपसर्जित व्यक्ति अपने अपसर्जक पर अभियोग लगाता है और अपसर्जक का अपचय करता है। आप अदालत में प्रत्याख्यान करते हैं। वकील असत्य की अभ्युक्ति करता है। इतने में अपनयन का एक और मुकदमा पेश होता है। लेकिन मुकद्दमे का लम्बन हो जाता है या विकृष्ट हो जाता हैं। आपका अभिकर्त्ता शपथ–पत्रक प्रस्तुत करता है जिससे फिर विकर्षण हो जाता है।''

एक अन्य उदाहरण–ड्राइविंग लायसेंस प्राप्त करने के लिए आवेदन के फार्म का नमूनाः

''क्या आप किसी चालन अनुज्ञप्ति या शिक्षार्थी अनुज्ञप्ति धारण करने के लिए निरसित हुए हैं? मैंने ..... रुपये के विहित शुल्क का संदाय कर दिया है।

क्या आवेदक अपने सर्वोत्तम निर्णय के अनुसार अपस्मार, अस्थि या किसी ऐसे मानसिक रोग के अध्यधीन है, जिससे उसकी चालन क्षमता पर प्रभाव पड़ने की संभावना हो।''

इन उदाहरणों से यह स्पष्ट है कि ये एक प्रकार से घटिया अनुवाद के नमूने हैं, जिनके लिए मुख्यतः अनुवादक की अपनी सीमित अनुवाद क्षमता तथा गौण रूप से पारिभाषित शब्दों के निर्मित अप्रचलित हिंदी पर्याय जिम्मेदार हैं।

भारतीय संविधान को लागू हुए छह दशक पूरे होने को आए। परन्तु अब भी सरकारी कार्यालयों में हिंदी में कामकाज अनुवाद की बैसाखी के सहारे ही हो रहा है। इस कारण हिन्दी अपनी सहज गति और स्वरूप में नहीं आ पा रही है। अतिश्योक्ति नहीं होगी यदि यह कहा जाय कि वह लड़खड़ा कर चल रही है। राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(3) के अनुपालनार्थ सृजित हिन्दी अनुवादकों की प्लैटून अंग्रेजी के दस्तावोजों को हिन्दी में परिणत करने में लगी हुई है अथवा जूझती रहती है और ये हिन्दी पाठ ही वह हिन्दी है जो कठिन, दुरूह या अबोधगम्य बताई जाती है। अनुवादक यद्यपि एक कुशल कामगार है, जो राजभाषा हिन्दी में समान्तर दस्तावेजों का निर्माण करने में लगा है तथापि उसकी अपनी व्यक्तिगत सीमाएं भी हैं। उससे यह अपेक्षा की जाती है कि वह अर्थ का अनर्थ न होने दे तथा यथासंभव अंग्रेजी पाठ के समीपतम रहे। वस्तुतः प्रशासन में जिस हिन्दी का प्रयोग होता है, उसमें और जो हिन्दी साधारण आदमी अपने रोजमर्रा जीवन में प्रयोग में लाता है–उसमें बहुत अन्तर है। प्रशासन में बेहद शास्त्रीय, भारी भरकम शब्दों वाली, विद्वता से आक्रांत हिन्दी का प्रयोग इस कारण भी होता है कि राजभाषा संबंधी काम करने वाले कर्मचारी उच्च शिक्षा प्राप्त (हिन्दी में एम.ए. या पी.एच.डी.) होते हैं और उनकी यह उच्च शिक्षा ही उन्हें इस भारी भरकम हिन्दी का इस्तेमाल सिखाती है। किसी बात को कहने के लिए प्रयुक्त भाषा (शब्द समूह) और शैली वार्ताकार व्यक्ति की योग्यता के स्तर पर आधारित होती है। योग्य और अनुभवी व्यक्ति अपने वक्तव्य के लिए विभिन्न पर्याय ढूँढ सकता है और तदनुसार पाठक की बोधगम्यता के स्तर के अनुसार उनका प्रयोग कर सकता है। सीमित योग्यता रखने वाले व्यक्ति के पास विचारों की स्पष्टता

और विकल्पों की बहुलता का अभाव होने से वह चाहते हुए भी तथाकथित सरल शब्दावली के प्रयोग से वंचित रह जाता है। यह बात पाठक पर भी लागू होती है। योग्य पाठक के लिए भाषा की क्लिष्टता का दायरा सीमित होगा जबकि हिन्दी का अधूरा ज्ञान रखने वाले पाठक को कथ्य की स्पष्टता में कठिनाई होगी ही।

राजभाषा और जनभाषा में अन्तर है। जनभाषा में औपचारिकता जरूरी नहीं है जो सरकारी कामकाज में होती है। वह लोगों की दिन–प्रतिदिन की अनुभूतियों, अनुभवों और आवश्यकताओं को प्रतिबिम्बित करती है, जिसके लिए किसी तकनीकी या पारिभाषिक शब्दों की आवश्यकता नहीं होती। जन भाषा का आधार जिन्दगी है जबकि राजभाषा का आधार प्रशासन है। तदनुसार, भाषा का विभिन्न स्तरों पर प्रयोग अलग–अलग ढंग से होता है। हम सभी अपने रोजमर्रा के व्यवहार में लिखते समय और बोलते समय अलग–अलग तरह की भाषा का प्रयोग करते हैं। लिखते समय भाषा के प्रति हम अत्यधिक सजग और सचेत रहते हैं, जबकि बोलते समय हम थोड़े असावधान और लापरवाह होते हैं। चूंकि सरकारी भाषा मूलतः लेखन में प्रयुक्त होती है, इसलिए उसमें औपचारिकता का निर्वाह भी कुछ अधिक होता है।

भारत जैसे बहुभाषी राष्ट्र में जहां भाषागत विविधता को हम स्वीकारते हैं तो ऐसे में भाषा के सरलीकरण की आवश्यकता के बारे में मांग होना स्वाभाविक ही है। इस संदर्भ में तकनीकी क्षेत्र में हिन्दी भाषा के सरलीकरण और एकरूपता सुनिश्चित करने के विषय में श्री शमीम अख्तर लिखते हैं कि जो कारोबार हमारे समाज में चलते रहे हैं उनमें काम आने वाले औजारों, उपकरणों जैसे आरी, छैनी, फावड़ा, कुदाली आदि का नाम स्थानीय भाषाओं में अलग–अलग है। इसके अलावा, मानवीय संबंधों को भी एक सर्वमान्य शब्द में व्यक्त नहीं किया जा सकता, जैसे माँ के लिए मदर, अम्मी, अम्मा, आई या बाई और फिर माता या 'मातु'। अतः वर्षों से चले आ रहे कुटीर धंधों में काम में आने वाले उपकरणों, साधनों एवं प्रक्रिया को व्यक्त करने वाले शब्दों का परित्याग करना दुष्कर है जबकि मशीनीकरण तथा बड़े उद्योगों में काम में आने वाले उपकरणों, प्रक्रिया आदि में हिन्दीकरण काफी हद तक किया जा सकता है। उपर्युक्त वक्तव्य को शब्दों की एकरूपता के सन्दर्भ में देखा जाना होगा।

इसमें संन्देह नही कि सरकारी कामकाज में प्रयुक्त होने वाली भाषा के सरलीकरण की प्रक्रिया में पारिभाषिक शब्दों की एकरूपता पर असर पड़ने का खतरा बना रहता है। इसी खतरे से आगाह करते हुए राजभाषा विभाग के दिनांक 27.4.1978 के कार्यालय ज्ञापन में मंत्रालयों और विभागों द्वारा प्रयुक्त प्रशासनिक तथा विधिक शब्दावली में एकरूपता सुनिश्चित करने का आग्रह किया गया है। उक्त कार्यालय ज्ञापन के अनुसार भारत सरकार के सभी कार्यालयों द्वारा अपने पत्रों, विज्ञापनों तथा अन्य सरकारी कार्यों में शिक्षा और विधि मंत्रालयों द्वारा अनुमोदित शब्दावली का प्रयोग ही सुनिश्चित किया जाना चाहिए क्योंकि शब्दों के मनमाने प्रयोग से न केवल भाषायी अराजकता फैलती है बल्कि पाठकों को तकनीकी शब्दों का ठीक–ठीक अर्थ समझने में भी कठिनाई होती है।

प्रश्न उठता है कि क्या सरलीकरण व एकरूपता परस्पर बाधक है? निर्धारित शब्दावली के प्रयोग की बाधा जितनी कठोर होती जाएगी सरलीकरण की प्रक्रिया उतनी ही कठिन होती जाएगी। अतः हमें कोई मध्यमार्ग अपनाना होगा। आदर्श स्थिति यह होगी कि निर्मित या निर्धारित शब्दावली को प्राथमिकता देते हुए उसका अधिकाधिक प्रयोग बढ़ाया जाय जिससे समय रहते उन शब्दों के साथ तादात्मय स्थापित हो कर उनके क्लिष्ट या अबोधगम्य होने सम्बधी शिकायतों में कमी आ सके।

सत्य ही कहा गया है कि शब्द न तो कठिन होता है और न ही सरल, वह परिचित या अपरिचित हो सकता है। परिचित शब्द का अर्थ, भाव या आशय हमारी समझ में आता है और इसके विपरीत अपरिचित शब्द हम समझ नहीं पाते हैं। परन्तु हम उसे क्रमशः सरल और कठिन शब्द की

संज्ञा दे देते हैं, जो सही स्थिति नहीं है। उल्लेखनीय है कि वर्षों पूर्व जब दूरदर्शन पर हिन्दी में समाचारों का प्रसारण शुरू हुआ तो कुछ महानुभाव यह कहते पाए गए कि हिन्दी बुलेटिन पूरी तरह समझ में नहीं आता, इसलिए उसके बाद अंग्रेजी बुलेटिन भी देखना पड़ता है। स्पष्टतः उन महानुभावों को बुलेटिन में प्रयुक्त कुछ शब्द, जिन्हे हम पारिभाषिक शब्द कह सकते है, समझ में नहीं आ पाते होंगे, ऐसे अपरिचित शब्दों के कारण ही प्रयुक्त भाषा को क्लिष्ट भाषा की संज्ञा दे दी जाती है। समय गुजरने के साथ धीरे–धीरे वही शब्द उनके बार–बार प्रयोग से समझ में आने लगते हैं और वही भाषा स्वतः सरल हो जाती है। आज स्थिति यह है कि ऐसे महानुभावों की संख्या अब नगण्य ही होगी, जिन्हें हिन्दी समाचारों को समझने के लिए अंग्रेजी समाचार बुलेटिनों का सहारा लेना पड़ता हो।

इन परिस्थितियों में, श्री शमीम अख्तर द्वारा दिए गए सुझाव के अनुसार, जिस स्तर से व्यावसायिक शिक्षा प्रारंभ की जाती है, वहीं से हिन्दी के प्रयोग पर बल दिया जाए। धीरे–धीरे उच्चतर शिक्षा में हिन्दी का समावेश किया जाए। पुस्तकें एवं अन्य पाठ्य सामग्री हिन्दी भाषा में उपलब्ध करायी जाए। उनका मानना है कि अधिक प्रचलित शब्दों का प्रयोग करते हुए क्लिष्ट शब्दों को पर्यायों के रूप में रखा जाय ताकि उन लोगों के चिन्तन और विचारधारा को भी ठेस न लगे जो यह सोचते हैं कि भाषा को सरल बनाने एवं अन्य भाषाओं के शब्दों के समावेश से हिन्दी भाषा का स्वरूप बदल जाएगा। वस्तुतः अन्य भाषाओं के शब्दों को अपनाने से सहृदयता प्रकट होती है, उससे भाषा का दायरा और शब्द भण्डार दोनों बढ़ते हैं।

रघुनाथ सहाय
पूर्व निदेशक (रा.भा.)
बीए – 294/2 टैगोर गार्डन,
नई दिल्ली–27

आशियाना

बरसों की मेहनत तिल–तिल जमा करके,
हमने अपने आशियाने बड़े प्यार से बनाए थे,

भयंकर भूकम्प और सुनामी की नफ़रत भरे कहर,
हमारे आशियाने उजाड़ कर, हमें सड़कों पे ले आए थे,

आज हम अपने आशियाने, फिर से बनाएंगे,
परीन्दों से लेंगे प्रेरणा, प्रकृति से सम्पदा पाएंगे,

ईश्वर से आशीष लेंगे, फिर से संवर जाएंगे,
ये तो प्रकृति का नियम है, उजाड़ेगा संवारेगा,

मानव अंश ईश्वर का, उनका कोई क्या बिगाड़ेगा,
नया रूप पाकर, आशियाना फिर बन जाएगा।

मंगत राम
कार्यालय अधीक्षक
मुख्य अभियंता का कार्यालय
ए.पी.डब्लू.डी, पोर्ट ब्लेयर
अण्डमान – 744101

एक कप चाय कितने की

यह उन दिनों का वाक्य है जब दिल्ली वासियों को इधर से उधर और उधर से इधर आने जाने के लिए केवल डी.टी.सी. बस सेवा पर निर्भर रहना पड़ता था। मैं भी थके हारे यात्रियों की तरह कतार में लगकर बस का इंतजार किया करता था। बस का इंतजार करना एक परेशानी होती थी और उससे ज्यादा बस स्टाप पर ड्राइवर साहिब का विश्राम। एक चक्कर की डयूटी करने के पश्चात् 15–20 मिनट आराम करना हर एक ड्राइवर की आदत सी बन गई थी।

बस स्टैंड पर बस के आने के पश्चात यात्रियों की परवाह किए बगैर ड्राइवर साहिब चाय के लिए चाय वाले को हुक्म किया करते थे। यात्री सीट हासिल करने के लिए एक दूसरे से गुथ्थम–गुथ्था होकर बस में घुस जाते थे। बस पर चढ़ने के पश्चात् देखते थे कि चालक महोदय बस से नीचे उतरे हुए हैं। चाय बनने और पीने में यदि आधा घंटा लग भी जाए तो किस को किस की परवाह? यात्री चालक का इंतजार करते थे और चालक चाय के प्याले का। यदि बस में 60 यात्री चालक के इंतजार में 15 मिनट खोते हैं तो 15 मानव घंटे (Man Hours) बरबाद हुए। यदि साधारण यात्री के समय की कीमत पाँच रूपया प्रति घंटा आंकी जाए तो रुपए 75/– का समय बरबाद हुआ। चालक चाय के प्याले के लिए तीन रूपया अदा करता है और देश रुपए 75/– का। चाय का प्याला तीन रूपए का या कि रुपए 75 का? हमारे कार्यों की छिपी लागत यदि हमें ज्ञात हो तो यह देश के लिए अच्छा होगा।

अरुण कुमार शर्मा
मुख्य अभियंता,
सड़क परिवहन एवं राजमार्ग विभाग,
परिवहन भवन, नई दिल्ली

भाषा के नाना प्रकार

भाषा अभिव्यक्ति का एक माध्यम है। जो हम कहना चाहते हैं, दूसरा व्यक्ति वह बात समझ जाये और वह उसका वही अर्थ लगाये, जो हम कहना चाहते हैं, वही भाषा बन जाती है। भाषा के लिए लिपि का होना आवश्यक नहीं है। मूक व्यक्ति सांकेतिक भाषा का प्रयोग करते हैं और आपस में खूब अच्छी तरह समझ भी लेते हैं। आदि मानव सांकेतिक भाषा का प्रयोग करता था। अनादिकाल में तरह–तरह के वाद्य यंत्रों से बातचीत की जाती थी। अफ्रीका के कबीले आज भी आपस में ढोल के माध्यम से व्यापार करते हैं और काफी दूर से सौदा कर लेते हैं। जिसमें किसी भी वस्तु का भाव, मात्रा तथा आपस में मोल–भाव भी ढोल की लय व ताल से तय हो जाता है। बेचने वाला व्यक्ति उस भाव में अपनी वस्तु यदि बेचना चाहता है, तो वह ढोल बजाकर ही सौदे को समाप्त कर देता है।

भाषा के अनेक रूप व स्वरूप हैं भाषा में भिन्न–भिन्न रंगों का समावेश है। विश्व में लगभग 3000 भाषायें है। समाज के साथ–साथ भाषा के रूप एवं स्वरूप में भी परिर्वतन होता आया है। कुछ भाषायें मिलकर एक नई भाषा बन जाती है। भारत वर्ष में बोली जाने वाली अधिकांश भाषायें आर्य परिवार की है। इनका मूल स्रोत संस्कृत है। ग्रीक, फारसी, लेटिन आदि अनेक भाषायें भी उसी भाषा से विकसित हुई हैं, जिससे संस्कृत विकसित हुई है। भारत–यूरोपीय भाषा परिवार विश्व का अत्यंत विशाल भाषा परिवार है। इसका प्राचीनतम रूप वैदिक संस्कृत है। जिस रूप में आज हिंदी बोली व समझी जाती है, वही खड़ी बोली का रूप है, जिसका विकास मुख्यतः 19 वीं शताब्दी में हुआ। खड़ी बोली का प्राचीनतम रूप 10 वीं शताब्दी से मिलता है। चन्द्रबरदाई द्वारा लिखा गया महाकाव्य 'पृथ्वीराज रासो' हिंदी का प्रथम महाकाव्य है। जिसमें पृथ्वीराज चौहान के शौर्य व वीरता का बखान किया गया है। अमीर खुसरो हिंदी में कविता लिखने वाले प्रथम मुस्लिम कवि माने जाते हैं। 13वीं–14वीं की शताब्दी में अपने गुरु शेख निजामुद्दीन औलिया की मृत्यु शैय्या पर उनके मुख से हिंदी में ये उद्‌गार निकले।

''गौरी सोवे सेज पर मुख पर डाले केश।
चल खुसरो तू घर अपने, रैन भई चहुँ देश।।

अमीर खसरो ने हिंदी में पहली बार कुछ पहेलियां भी लिखी। जैसे :–

''एक थाल मोती से भरा, सबके सिर पर औंधा धरा।
चारों ओर वह थाली फिरे, मोती उससे एक न गिरे।''

उत्तर– आकाश

मध्य काल में यह खड़ी बोली मुख्यतः बोलचाल के रूप मे व्यापक रूप से प्रचलित रही।

किसी भी व्यक्ति को समझने के लिए या उसे बात समझाने के लिए, हमें उसकी भाषा सीखनी पड़ती है। मां की गोद से निकला हुआ बच्चा भी माँ की या अन्य निकट संबंधियों की बात समझ लेता है, एवं इसी प्रकार अपनी बात भी व्यक्त करता है, उसकी मां अच्छी तरह समझ लेती है। यद्यपि मां को और भी भाषायें आती है, किन्तु वह अपने शिशु को समझाने के लिए अपनी मातृभाषा का ही प्रयोग करती है। अंग्रेजों लोगों ने विश्व के जिन भागों में अपना साम्राज्य फैलाया, वहां अंग्रेजों ने पहले उस क्षेत्र की भाषा को सीखा, समझा एवं उसका प्रयोग किया एवं उसके बाद उन्होंने अपनी भाषा अंग्रेजी को विश्वव्यापी बनाया। इसी तरह किसी

व्यक्ति पर राज करने के लिए भी पहले हमें उस व्यक्ति की भाषा को सीखना होगा। जो नारी अपने गृहस्थ जीवन को सुखमय बनाना चाहती है, वह अपने पति की भाषा को अच्छी तरह सीखे और समझ ले और उसी भाषा में बहकर सुर से सुर ताल मिलाकर जीवन को संगीतमय बनाये, व लयबद्ध करे। अन्यथा घर्षण से जीवन गर्म ही रहेगा। जिन स्त्रियों ने जीवन के इस मर्म को समझ लिया है, वे बड़ी शान से पति के सिर पर सवार होकर राज कर रही हैं। ऐसी पत्नियों के पति Hen Packed अर्थात् पत्नीभूत हो जाते हैं।

जो एक दूजे से, करत हैं प्यार।
बिन बातन कह, करत वो बात हजार।।

खुशी तथा दुःख के समय व्यक्ति सदैव अपनी मातृभाषा का ही प्रयोग करता है, भले ही वह कितनी ही भाषायें क्यों न जानता हो। इस संबंध में मुझे एक प्रसंग याद आता है। एक दिन बादशाह अकबर के दरबार में एक विद्वान पधारे और उन्होंने पांच–छः भाषाएँ धाराप्रवाह बोल कर सभी दरबारियों को मंत्रमुग्ध कर दिया। अंत में उन्होंने बादशाह को चुनौती दी कि इस दरबार में कोई भी व्यक्ति उसकी मातृभाषा नहीं बता सकता है। बादशाह अकबर ऐसी चुनौती क्यों न स्वीकार करते, जहां पर बीरबल जैसे चतुर व्यक्ति मौजूद थे। अतः बादशाह अकबर ने उस व्यक्ति की चुनौती को स्वीकार कर लिया एवं उसकी मातृभाषा का पता लगाने हेतु बीरबल को कहा। बीरबल ने राजा से एक दिन का समय मांगा। दूसरे दिन बीरबल प्रातःकाल ही उस विद्वान के विश्राम स्थल पर पहुँच गये और देखा कि वह व्यक्ति सो रहा है। बीरबल ने एक बाल्टी पानी भरकर उस पंडित पर डाल दी। वह व्यक्ति हड़बड़ा कर उठा और अपनी मातृभाषा में बीरबल को भला–बुरा कहने लगा। बीरबल का उद्देश्य पूरा हो गया और उन्होंने उस पंडित से उसकी मातृभाषा में क्षमा मांगी। इस तरह बीरबल ने उस विद्वान की मातृभाषा बता दी।

क्राँति की स्रोत–भाषा :–

इतिहास साक्षी है कि भाषा ने विश्व में कई क्रांतियाँ की हैं। कई युद्धों का कारण भाषा ही रही है। द्रौपदी द्वारा दुर्योधन के लिये प्रयुक्त उपहास वाक्य 'अंधे का पुत्र अंधा ही होता है।' महाभारत के युद्ध का कारण बना।

फ्रांसीसी दार्शनिक रूसो द्वारा लिखित पुस्तक– दी सोशल काँट्रेक्ट (The Social Contract) ने फ्राँस में क्राँति करा दी। रूसो ने इस पुस्तक में मानव की स्वतंत्रता पर बड़ी ही संवेदनशीलता व्यक्त की है। उसमें उन्होंने आह्वान् किया है कि हर व्यक्ति बिना किसी बंधन के स्वतंत्र ज़न्मा है और वह इस संसार से स्वतंत्र ही विदा लेता है। अतः उसे किसी सामजिक बंधन में मत जकड़ो। उस समय फ्रांस के सम्राट व अमीर वर्ग द्वारा प्रजा का शोषण किया जा रहा था। रूसो की यह पुस्तक हाथों–हाथ बिकी और फ्रांस की क्रांति का मुख्य कारण बनी।

गोस्वामी तुलसीदासजी युग प्रवर्तक के रूप में पूजे जाते हैं। उनके द्वारा रचित 'रामचरितमानस' की महान हिन्दू ग्रन्थ के रूप में पूजी जाती है। 'रामचरितमानस' न केवल एक महान हिन्दू ग्रन्थ है, अपितु हिंदी साहित्य में ज्ञान का एक विशाल भंडार भी है। गोस्वामी तुलसीदासजी की यह महान कृति 'रामचरितमानस' हिंदी साहित्य में अपना विशिष्ट स्थान रखती है। तुलसीदासजी इसमें अनेक प्रकार के अलंकार प्रयोग में लाए हैं। अवधी भाषा में दोहे, चोपाई, सोरठा और छप्पय आदि छंदों में इसकी रचना हुई हैं। इस ग्रन्थ में सभी रसों का वर्णन देखते ही बनता है।

इस अभूतपूर्व महाकाव्य के रचनाकार तुलसीदास जी का प्रेरणा स्रोत उनकी पत्नी रत्नावली द्वारा दिया गया उलाहना था। गोस्वामी तुलसीदासजी अपनी पत्नी को असीम प्यार करते थे। एक बार वे अपने मायके चली गईं, तो तुलसीदास जी भी उनके पीछे–पीछे वहां पहुंच गये। अत्यंत लज्जित होकर रत्नावली ने तुलसीदास जी को फटकार लगाई।

लाज न आवत आपको, दोरे आयहु साथ।
धिक–धिक ऐसे प्रेम को, कहां कहौं मैं नाथ।।

अस्थि चर्ममय देह मम, तामें ऐसी प्रीति।
तैसी जो श्री राम में, होत न तब भव भीति।।

पत्नी का यह वचनरुपी तीर तुलसीदासजी के मर्मस्थल में लगा। उन्हें इस संसार से विरक्ति हो गयी। घर बार छोड़कर के इस महान ग्रंथ की रचना में लग गये। पतिव्रता रत्नावली को बड़ा धक्का लगा वो पति वियोग सहन न कर सकी और बीमार रहने लगी। अतः इसी वियोग में उन्होंने यह संसार त्याग दिया। तुलसीदासजी को उनकी पत्नी के स्वर्गवास का समाचार एक मंदिर में मिला। इस उल्हाने से प्रेरित होकर उन्होंने इस महाग्रंथ रामचरितमानस की रचना कर डाली। सबसे आश्चर्य की बात तो यह है कि इस पूरे ग्रंथ में उन्होंने अपनी पत्नी रत्नावली का कहीं कोई उल्लेख नहीं किया है।

नम्रता की भाषा :–

अंहकारी एवं दंभी व्यक्ति की अकड़ की भाषा और गवाँर व्यक्ति की गवाँरू भाषा होती है। जो व्यक्ति की भाषा होती है उसको समझाने के लिए उसी भाषा का प्रयोग प्रभावकारी होता है। मीठी वाणी बोलने से सभी प्रसन्न होते हैं। अतः प्रयुक्त शब्दों में मिठास की दरिद्रता क्यों की जाए।

तुमने बड़ी भारी आँधी देखी है ?
आँधी में पेड़ गिरते हुए देखे हैं ?
आँधी में भी घास को बचे हुए देखा है ?
पेड़ क्यों गिरा ?

वह झुका नही, वायु ने उस गिरा दिया।
घास झुक गई, भूमि से लग गई।
वायु घास को उखाड़ न सकी,
घास बची, अपनी नम्रता से।

अतः नम्र रहकर व्यक्ति अपने बड़े–बड़े कार्य करा लेता है। जो व्यक्ति जिस व्यवसाय में होता हैं, उसकी भाषा भी उसी प्रकार की हो जाती है। वास्तव में भाषा व्यक्ति के व्यक्तित्व की परिचालक है। बोली का असर हमारे व्यक्तित्व पर ही नहीं बल्कि दूसरों के दिलो–दिमाग पर भी पड़ता है। बोली से व्यक्ति की सभ्यता, सौम्यता एवं शिक्षा के विषय में आभास हो जाता है। वाणी से हमारे विचार व्यक्त होते हैं और हमारी भावनाएं व्यक्त होती हैं। वाणी के प्रभाव से ही दूसरों के मन में हमारे विषय में धारणा बनती है। इस विषय में एक प्रसंग याद आता है।

एक राजा अपने सेनापति के साथ वन–विहार के लिए जा रहा था, रास्ते में राजा को प्यास लगी। पानी प्राप्ति के लिए स्थान की तलाश की गई। वहां दूर एक झोंपड़ी दिखाई दी। राजा एक वृक्ष की छाया में विश्राम करने बैठ गया और सैनिक को पानी लाने के लिए झोपड़ी मे भेजा। वहां पहुंचकर सैनिक ने एक अंधे को बैठा देखा और अपने सैनिक अंदाज में कहा, 'ए अंधे, राजा के लिए पानी चाहिए, एक लौटा पानी दे।' अंधा बोला तेरे जैसे सिपाही से मैं नही डरता। मैं पानी नही दूंगा। सिपाही ने लौटकर सेनापति को बताया कि वह आदमी अंधा है और पानी देने से मना कर रहा है। सेनापति स्वयं गये और अंधे से बोले 'अंधे भाई पैसा ले लो और पानी दे दो। अंधा बोला अच्छा सैनिक के सरदार मालूम होते हो, जाओ तुम्हे भी पानी नही मिलेगा। सेनापति भी लौट आये, तो राजा स्वयं वहां पहुंचा और अंधे से कहा सूरदास जी प्यास के मारे प्राण कण्ठ में आ रहे हैं, थोड़ा–सा पानी दे दीजिए, बड़ी कृपा होगी। राजा के कहे यह शब्द सुनकर अंधा उठ खड़ा हुआ और बोला पधारिए राजा जी यह मेरा सौभाग्य है कि आप मेरी कुटिया में पधारे हैं और मुझे अपनी सेवा का अवसर दिया। जल पीकर राजा तृप्त हुआ और अंधे व्यक्ति से पूछा, आप तो देख नहीं सकते थे, फिर यह कैसे जान गये कि पहला व्यक्ति सैनिक था, दूसरा सेनापति और मैं राजा हूँ। अंधा व्यक्ति बोला कि बोलचाल से ही आदमी का पता चल जाता है। विनम्रता श्रेष्ठ गुण है। विद्या से विनम्रता आती है और नम्रता से योग्यता प्राप्त होती है। विनम्रता एक ऐसा गुण है जो अन्य गुणों को भी प्रशंसित व सुशोभित करता है। विनम्रता का न होना व्यक्ति को

दूषित कर देता है।

ऐश्वर्य की शोभा सृजनता है, शूरवीरता की शोभा वाक् संयम है, ज्ञान की शोभा उपशम है, विद्या की शोभा विनय है, धन की शोभा सतपात्र को दान करना है, तप की शोभा अक्रोध है, समर्थ की शोभा क्षमा है, धर्म की शोभा दंभहीनता है और इन सबकी शोभा सुशीलता है, जो सभी गुणों का हेतु है।

नयनों की भाषा :–

भावनात्मक अभिव्यक्ति का अनूठा माध्यम है नयनों की भाषा। यह वह भाषा होती है, जिसे मनुष्य बचपन से ही सीख लेता है। आंखें अपनी भाषा में नौ भावों का मौन संदेश देती हैं। आँखें भावनाओं को न सिर्फ व्यक्त करती हैं, अपितु दूसरों की भावनाओं को प्राप्त भी करती हैं। आंखों की भाषा का प्रभाव सिर्फ दिमाग पर ही नहीं बल्कि दिल पर भी पड़ता है। वास्तव में आंखें मस्तिष्क का दर्पण है। जब आप किसी की आंखों में झांकते हैं, तो आप वास्तव में उसके दिमाग में झांक रहे होते हैं। आंखों के माध्यम से हम दूसरों के अन्तर्मन में प्रवेश करने लगते हैं और उसके अंदर तक हलचल मचा देते हैं। किसी व्यक्ति को लगातार देखने से उसे घूरने की संज्ञा मिल जाती है। वहीं अपने परिचित या अन्य व्यक्ति को न देखने पर उपेक्षा या अवहेलना या आंखें चुराने का संबोधन प्राप्त हो जाता है।

आँखों की भाषा अबोध शिशु ही नहीं जानते, उनकी आंखे स्वच्छ, निर्विकार और भाव विहीन होती है। कई स्थितियाँ ऐसी होती हैं, जब बोलने की बजाए मौन रहना अच्छा होता है। ऐसी स्थिति में आंखों की भाषा बहुत उपयोगी होती है। आंखे मन का भेद खोल देती हैं। आंखों की भाषा का उपयोग करने में पुरूषों से ज्यादा स्त्रियाँ दक्ष और अभ्यस्त होती हैं। नारी की यह विशेषता है कि उसे किसी भी व्यक्ति की आंखों की भाषा समझने में कठिनाई नहीं होती है। आंखों की भाषा समझकर वह पुरूष के स्वभाव, चरित्र और मनोवृति को भांप लेती है।

नाक की भाषा :–

शरीर के सभी अंगों में नाक का एक विशेष महत्व है। सुंदर और सुगठित चेहरा सुंदरता की श्रेणी में तभी आता है, जबकि नाक भी उसी अनुपात में हो। सुंदर नाक के बिना चेहरे की सुंदरता पूर्ण नहीं मानी जाती है। हिन्दी भाषा में नाक पर जितने मुहावरे प्रचलित है, उतने शरीर के किसी अन्य अंग पर नहीं है। नाक व्यक्ति की प्रतिष्ठा, आन–बान और शान का प्रतीक है।

किसी व्यक्ति का मिजाज तेज हो, तो उसे तुनक मिजाज कहा जाता हे। बनी ठनी तुनक मिजाज स्त्री को नखरेवाली की संज्ञा दे दी जाती है। ऐसी स्त्रियाँ अपनी नाक पर मक्खी बैठने नहीं देती हैं। अपने मान–सम्मान की रक्षा करने पर संबोधन किया जाता है कि तुमने मेरी नाम रख ली। कोई वस्तु पसंद न आने पर नाक सिकोड़ने की संज्ञा दी जाती है। किसी व्यक्ति का काम न बनने पर व्यंग्य किया जाता है कि तुम्हारी नाक जगह पर लगी हुई है कहीं कट कर तो नहीं गिर गई। किसी व्यक्ति को सीधे जाने के लिए–नाक की सीध में जाने को कहा जाता हे। किसी व्यक्ति के अनावश्यक हस्तक्षेप को जबरदस्ती नाक घुसाना कहते हैं। बेशर्म व्यक्ति को नकटा होने का संबोधन किया जाता है। दंभी व्यक्ति को नक्कूशाय होने की उपमा दी जाती है। किसी व्यक्ति को तंग करना है, तो उसे नाकों चने चबवाए जाते हैं। किसी व्यक्ति को अपने सामने झुकाना है तो उससे नाक रगड़वाई जाती है। वैसे व्यक्ति का जीवन भी नाक में है जब व्यक्ति बहुत परेशान हो जाता है तो उसकी नाक में दम आ जाता है। व्यक्ति को नियंत्रित करने के लिए नाक में नकेल डाल दी जाती है। अवध के बादशाह नसरूद्दीन की अत्यन्त चहेती दासी धनिया के लिए बेगमों ने ईर्ष्या पूर्वक 'नसरूद्दीन की नाक का बाल' होने की संज्ञा दी थी। वैसे भी अत्यंत प्रिय स्त्री के लिये, दूसरी स्त्रियाँ नकचढ़ी होने का व्यंग्य करती हैं।

अंग्रेजी में एक कहावत है Paying Through Nose जिसका शाब्दिक अर्थ है पैसे को नाक से खर्च करना।

किसी वस्तु के लिए अनावश्यक खर्च कहा जाता है। इसकी उत्पत्ति महारानियों द्वारा अपनी नाक के लिए किए गए खर्च से हुई। चूंकि महारानियाँ अपने आप अपनी नाक साफ करना तौहीन समझती थीं, अतः इस कार्य के लिए बाँदियों की नियुक्ति की गई, जिनका कार्य महारानी की नाक साफ करना होता था। बाँदियों को इस कार्य के लिए सोने की गिन्नियाँ दी जाती थीं। उसी से वह शब्द चल निकला– Paying Through Nose

नाक की सौंदर्यवर्धक नथ के बिना नखरानी की महिमा अधूरी रहेगी। नासिकाभूषण नथ या लौंग किसी भी स्त्री की नाक का अभिन्न अंग है। कोई भी नारी अपनी नाक सूनी रखना सह नहीं सकती है। हिन्दू नारी की गरिमा वस्तुतः नथ की सतरंगी छवि में छिपी हुई है। नथ नारियों के लिए सुहाग, सुख, साख और समृद्धि का सूचक है वहीं यह स्त्री को संयमी एवं सहनशील बनाती हे।

शिल्पियों की भाषा :–

विश्व में जितने भी मूर्ति शिल्पी हुए हैं उन्होने अपनी भावनाओं को प्रतिमा के द्वारा व्यक्त किया है। मौन प्रतिमायें जीवन जीने का संदेश देती है। 'स्टेचू ऑफ लिबर्टी' शिल्पकार फेडिरिक अगस्ती ने अपनी प्रतिमा का मुख अपनी माता का और प्रतिमा का शरीर अपनी पत्नी का बनाया, उससे उन्होने सारे विश्व को यह संदेश दिया है कि किसी भी व्यक्ति के मन में स्त्री का सुंदरतम रूप उसकी माता और सुंदरतम शरीर अर्द्धांगिनी का होता है।

रावण के दस मुख आप सभी ने देखे होंगे। वास्तव में रावण का एक ही मुख था। शेष नौ मुख काल्पनिक बनाए गए हैं, जो जीवन में विद्यमान नौ भावों को व्यक्त करते हैं। ये नौ भाव क्रोध, घृणा, करुणा, स्नेह, श्रृंगार, भय, विस्मय, शोक एवं हर्ष है। अतः दशानन के हर मुख अलग–अलग प्रकार से बनाये जाते हैं जो कि इन नौ भावों को व्यक्त करते हैं।

वैसे तो सभी हिन्दू देवी देवताओं की हर मूर्ति जीवन के लिए कुछ न कुछ संदेश अवश्य देती है। परन्तु श्री गणेश की प्रतिमा जीवन के लिए एक उत्कृष्ट है व अनुकरणीय उदाहरण है। ये रिद्धि–सिद्धि विनायक हैं। इनका गज शीर्ष उच्च बुद्धि का प्रतीक है, वही इनकी सूँड ऊँ (ओउम) की रचना करती है। दामोदर जी के कटिभाग पर सर्प का घेरा है जो अनन्त अंतरिक्ष ऊर्जा का बोध कराता है इनका टूटा हुआ दाँत ज्ञान का प्रतीक है। इसी प्रकार इनके विशाल कान वास्तविकता को पृथक करने की क्षमता का बोध कराते हैं। इनका विशाल मानव शरीर–सर्वोच्च बुद्धिमत्ता का प्रतीक है। इनका विशाल उदर–भले व बुरे सभी प्रकार के अनुभवों की अद्‌भुत पाचन शक्ति का द्योतक है। लम्बोदरजी ने अपना एक पाँव जमीन पर रखकर संतुलन बनाया हुआ है, जो इनकी विलक्षण–एकाग्रता का बोध कराता है। इनकी चार भुजायें मन, बुद्धि, अंहकार व चित्त का प्रतीक हैं। श्री गणेश के हाथ में एक कुल्हाड़ी है, जो सभी प्रकार की सांसारिक महामाया के त्याग को दर्शाता है। वहीं मोदक (लड्डू) आध्यात्मिक प्रफुल्लता के प्रतिफल का ज्ञान कराता है। खाद्य सामग्री–सुख, समृद्धि व शक्ति की सूचक है। श्री सिद्धि विनायक मूषक पर सवारी करते हैं, जो यह दर्शाता है कि आप अपनी मन व कामनाओं को नियंत्रित रखें, न कि मन व कामनायें आपको नियंत्रित करें। इस प्रकार श्री सिद्धविनायक जी अपनी एक ही मुद्रा से जीवन के अनेक यथार्थों का संदेश देते हैं।

विनोद की भाषा :–

विनोद व हास्य का जीवन में होना आवश्यक है। इसके अभाव में जीवन नीरस और भावहीन हो जाता है। हँसने हँसाने की क्षमता रखने वाला व्यक्ति हर जगह लोकप्रिय बन जाता है। विभिन्न कवियों और लेखकों ने अपनी विनोदपूर्ण शैली से व्यक्तियों को प्रभावित किया है और खूब हँसाया है। वही वाक्‌चातुर्य में निपुण राजनीतिज्ञों ने विरोधियों पर कटाक्ष भी किये हैं।

अपने जीवन में इसी विनोद का रस घोलें। व्यक्तियों की भाषा को पहचाने, मुख से कम और भावों से ज्यादा अपनी भावनाओं को व्यक्त करें। वाणी को गले से नहीं, वरन अधरों से बोले। वाणी में इतनी मधुरता का रस हो कि मधु से होंठ चिपक जायें। आपकी जिन्दगी प्रफुल्लित व उल्लासमय बनी रहेगी। किसी भी धर्मसंकट में रामायण का सहारा अवश्य लें। जीवन की सभी शंकाओं का समाधान इसमें हैं।

प्रवीण कुमार कुलश्रेष्ठ
मुख्य अभियंता (सी.ह.ऊ.)
केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग
पूर्वी ब्लॉक – 1, आर. के. पुरम
नई दिल्ली